# विषय सूचि


| विषय | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| सम्पादक और प्रकाशक का निवेदन | .... | | क से घ |
| जैन-दर्शन में श्वेताम्बर तेरह-पन्थ | .... | | १ से १० |
| त्रस और स्थावर जीव समान नहीं हैं | .... | | ११ से ३४ |
| मारा जाता हुवा जीव, कर्म की निर्जरा नहीं करता, किन्तु अधिक कर्म बाँधता है | .... | | ३५ से ४८ |
| श्रावक कुपात्र नहीं है | .... | .... | ४९ से ७९ |
| दान–पुण्य .... | .... | .... | ८० से ९२ |
| दान करना पाप नहीं है | .... | .... | ९३ से १०९ |
| जीव बचाना पाप नहीं है | .... | .... | ११० से १२६ |
| तेरह-पन्थियों की कुछ भ्रमोत्पादक युक्तियाँ और उनका समाधान–संख्या १ से ७ तक | | .... | १२७ से १४६ |


## परिशिष्ट नं० १


| | | | |
|---|---|---|---|
| थली में पाँच दिवस का प्रवास ('तरुण जैन' से उद्धृत) | | | १४७ से १६० |
| श्री भग्न हृदय की चिट्ठी .... | „ | „ „ | १६१ से १६७ |
| चिट्ठी-पत्री .... .... | „ | „ „ | १६८ से १७१ |


## परिशिष्ट नं० २


| | |
|---|---|
| तेरह-पन्थ और 'जैन' पत्र (श्वे० मू० पू० 'जैन' में से अनुवादित) 'चोपड़ाजी का तेरह-पन्थ इतिहास' | १७२ से १७६ |


## परिशिष्ट नं० ३


| | |
|---|---|
| तेरा-पंथ अने तेनी मान्यताओ (गुजराती भाषा में) लेखक—श्रीमान् चिम्मनलाल चकुभाई शाह J. P., M. A. LL B. सॉलिसीटर | १७७ से १८२ |